● सुनो, समझो और पढ़ो :

४. सोनू हाथी

– उमाकांत खुबालकर

जन्म : ७ अक्तूबर १९५३, नागपुर (महाराष्ट्र) **रचनाएँ :** १०८ बार, एक था सुब्रतो, पेपरवाला, रुकती नहीं नदी, व्यतिक्रम, तिर्यक रेखा। **परिचय :** उमाकांत जी ने प्रचुर मात्रा में बालसाहित्य लिखा है। आप आकाशवाणी और वैज्ञानिक तथा शब्दावली आयोग से जुड़े रहें। प्रस्तुत एकांकी पशुओं के प्रति प्रेम तथा दयाभाव को जगाती है।

स्वयं अध्ययन

रूपरेखा के आधार पर कोई कहानी लिखो।

दृश्य १

(जंगल में लकड़हारा पेड़ काट रहा है। कुल्हाड़ी के वार से आहत हो पेड़ दर्द से कराहता है।)

पेड़ : लकड़हारे भाई ! मुझे मत काटो। मैं आप सबके काम आनेवाला हूँ।

विश्वास : मेरे बच्चे भूखे हैं। मैं क्या करूँ ? तुम्हारी लकड़ी काटकर बाजार में बेचूँगा, चार पैसे मिलेंगे। तभी चूल्हा जलेगा। बच्चों का कष्ट देखा नहीं जाता।

पेड़ : **(भयभीत होकर)** नहीं–नहीं। रुक जाओ भाई। क्या पूरा काट डालोगे मुझे ? मैं भी तुम्हारे बेटे जैसा हूँ।

विश्वास : ओफ ओ, बेटे का नाम ले लिया। मैं तुम्हें नहीं काट सकता। आज घर में चूल्हा नहीं जलेगा।

पेड़ : तुमने इनसानियत दिखाई। चलो इनसानियत की इस बात पर तुम्हें एक अनोखा उपहार देता हूँ।

विश्वास : **(खुश होकर)** कहते हैं न अंधे को आँख और भूखे को खाना इससे ज्यादा और क्या चाहिए।

पेड़ : **(पार्श्व में नन्हे हाथी के चिंघाड़ने का स्वर गूँजता है।)** ये नन्हा हाथी अपने परिवार से बिछड़ गया है। इसे तुम अपने साथ ले जाओ। यह बीमार है बेचारा, आठ दिनों से भूखा है।

विश्वास : **(चौंककर)** क्या कहा ? इसको अपने साथ ले जाऊँ ? यहाँ तो अपने रहने का ठौर–ठिकाना नहीं है, इसे कहाँ रखूँगा ? क्या खिलाऊँगा ? और डॉक्टर को पैसे कहाँ से दूँगा ?

पेड़ : मेरी बात मानकर इसे अपने साथ ले जाओ। तुम्हारे काम अवश्य आएगा।

विश्वास : यह कैसी सौदेबाजी है ? घर ले जाकर इसका क्या अचार डालूँगा ?

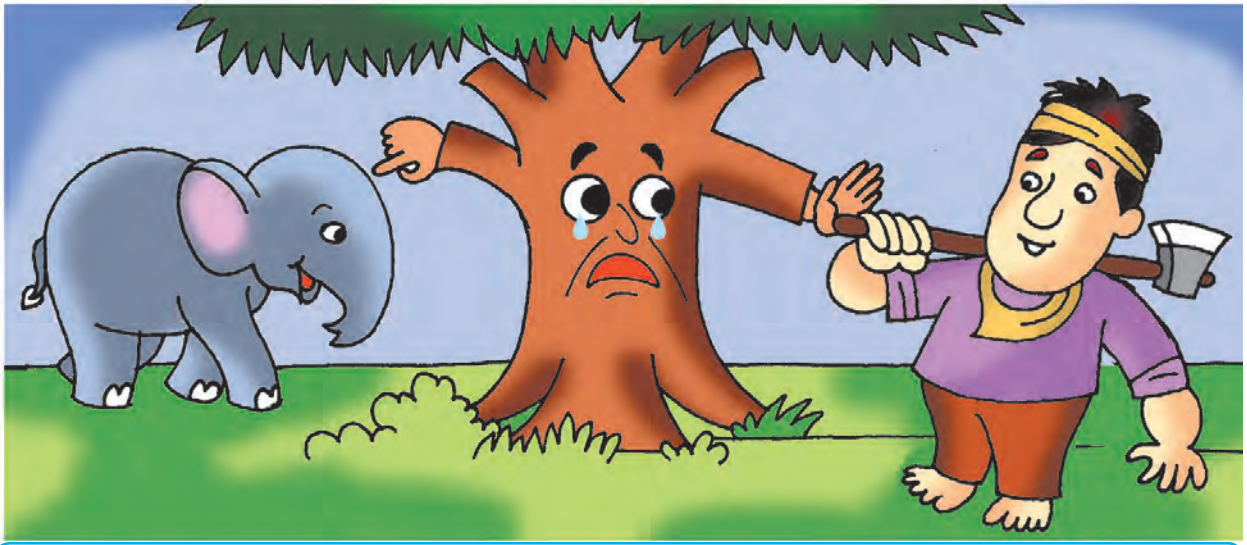

❑ उचित आरोह–अवरोह के साथ विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ। एकांकी के प्रमुख मुद्दों को प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से स्पष्ट करें। अच्छे इनसान में क्या–क्या गुण होने चाहिए पूछें। किसी नियत विषय पर भाषण देने के लिए कहें।

सुनो तो जरा

पाठ में आए हुए मूल्यों को सुनो और सुनाओ ।

पेड़ : भई, मैं कई जगह से कटा हुआ हूँ । अब आँधी-तूफान में कैसे बचूँगा ? इसे अपने पास नहीं रख सकता । क्या यह तुम्हारा बेटा नहीं बन सकता ? क्या यह तुम्हारा प्यार नहीं पा सकता ?

विश्वास : ठीक कहते हो । तुम्हें काटकर मैंने बहुत बड़ा अपराध किया है । अब दुबारा यह काम नहीं करूँगा। कोई-न-कोई रास्ता निकल आएगा । आज से मैं इसे सोनू कहूँगा । इसे देखकर बच्चे खुश होंगे ।

दृश्य २

(घर के आँगन में नन्हा हाथी और विश्वास खड़े हैं । सोनू स्वभाववश चिंघाड़ता है । सुमित्रा दरवाजा खोलकर बाहर आती है । पति के साथ नन्हे हाथी को देखकर चौंक पड़ती है ।)

विश्वास : **(सोनू से)** सोनू ये है तुम्हारी माता जी ।

सुमित्रा : **(झल्लाते हुए)** ये क्या देख रही हूँ ? घर में नहीं हैं दाने अम्मा चली भुनाने ! किसको पकड़ लाए हो ? घर में दो बच्चे हैं, उनकी चिंता नहीं है तुम्हें? इसको भी ले आए। कहाँ रखोगे, क्या खिलाओगे ?

विश्वास : कुछ भी कह देती हो ? अब लौटा नहीं सकता । अपने हिस्से की आधी रोटी खिलाऊँगा इसे ।

दृश्य ३

(सोनू के चिंघाड़ने का स्वर उभरता है । विश्वास को बीमार और दुखी पाकर खूँटा तोड़कर घर के अंदर आने का प्रयास करता है।)

विश्वास : **(खुशी से)** आ जा मेरे लाड़ले, तेरे पास आते ही कलेजे में ठंडक पहुँच रही है । मुझे बड़ा दुख है कि मैं तुम्हारे लिए ज्यादा कुछ नहीं कर पा रहा हूँ ।

सुमित्रा : **(गुस्से से)** मैं तुम्हें इसे ..... घर में नहीं रहने दूँगी।

विश्वास : ऐसा मत कहो । देखती नहीं यह कितना समझदार हो गया है । मुझे बीमार देखकर मेरे पास दौड़ा चला आया । अब तो बच्चे भी इसे पसंद करने लगे हैं ।

सुमित्रा : **(सिसकती हुई)** मैं इसकी दुश्मन थोड़े ही हूँ । मुझे अफसोस इस बात का है कि इसे भी अपने साथ भूखा रहना पड़ रहा है । घर में फूटी कौड़ी नहीं है । कहाँ से दाना-पानी जुटाऊँ ?

विश्वास : यही तो जिंदगी है भागवान । इनसान को खूब लड़ना पड़ता है । चल बेटा सोनू बाहर चल, तुझे कुछ

जरा सोचो ..... लिखो

यदि तुम्हें भी कोई हाथी का बच्चा मिल जाए तो ...

खिला-पिलाकर लाता हूँ। तेरे लिए दवा ले आता हूँ।

सुमित्रा : नहीं ? मैं तुम्हें इस बीमार हालत में बाहर नहीं जाने दूँगी। मैं ही सोनू को खिलाती-पिलाती हूँ।

विश्वास : **(कुछ सोचकर)** सुना है, पड़ोस के गाँव में बहुत बड़ा मेला लगा है। सोनू को भी साथ ले जाऊँगा। गाँववाले इसे केले और गन्ने खिलाएँगे। **(सोनू विश्वास की बात समझकर स्वीकृति में सिर हिलाता है।)**

सुमित्रा : मैं भी चलूँगी साथ में। बच्चे भी चलेंगे। **(वह सोनू के गले लिपट जाती है।)**

बड़ा बेटा : पिता जी, सोनू के ठीक हो जाने पर हम उसे उसके असली घर जंगल में छोड़ देंगे।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

वाचन जगत से

स्वामी विवेकानंद का कोई भाषण पढ़ो।

नए शब्द

पार्श्व = पीछे
ठौर-ठिकाना = सुरक्षित रहने का स्थान
सौदेबाजी = मोल-भाव की क्रिया
कलेजा = हृदय

मुहावरे

फूटी कौड़ी न होना = कुछ भी न होना
अफसोस होना = दुखी होना

कहावतें

अंधे को आँख और भूखे को खाना = जरूरतमंद को जरूरत की चीज मिलना
घर में नहीं दाने अम्मा चली भुनाने = पैसों के अभाव में भी बड़ा काम करने की तैयारी

विचार मंथन

।। वृक्षवल्ली आम्हां सोयरे वनचरे ।।

खोजबीन

अपने आस-पास के वृक्षों के नामों का पत्तों के आकारानुसार वर्गीकरण करो ।

छोटे	मध्यम	बड़े

*** जोड़ियाँ मिलाओ :**

'अ'	'ब'
(क) पेड़	सोनू हाथी
(ख) दो बच्चे	मेला
(ग) बीमार	अनोखा उपहार
(घ) पड़ोस का गाँव	भूखे
	सवारी

सदैव ध्यान में रखो

प्रत्येक परिस्थिति का सामना हँसते हुए करना चाहिए ।

भाषा की ओर

अर्थ के आधार पर वाक्य पढ़ो, समझो और उचित स्थान पर लिखो :

१. बच्चे हँसते-हँसते खेल रहे थे ।

२. माला घर नहीं जाएगी ।

३. इसे हिमालय क्यों कहते हैं ?

४. सदैव सत्य के पथ पर चलो ।

५. वाह ! क्या बनावट है ताजमहल की !

६. कश्मीर का सौंदर्य देखकर तुम्हें आश्चर्य होगा ।

७. खूब पढ़ो खूब बढ़ो ।

८. यदि बिजली आएगी तो रोशनी होगी ।

विधानार्थक वाक्य

विस्मयार्थक वाक्य

निषेधार्थक वाक्य

इच्छार्थक वाक्य

संकेतार्थक वाक्य

प्रश्नार्थक वाक्य

संभावनार्थक वाक्य

आज्ञार्थक वाक्य

पहले वाक्य में क्रिया के करने या होने की सामान्य सूचना मिलती है । अतः यह वाक्य **विधानार्थक वाक्य** है । दूसरे वाक्य में आने का अभाव सूचित होता है क्योंकि इसमें **नहीं** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **निषेधार्थक वाक्य** है । तीसरे वाक्य में प्रश्न पूछने का बोध होता है । इसके लिए **क्यों** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **प्रश्नार्थक वाक्य** है । चौथे वाक्य में आदेश दिया है । इसके लिए **चलो** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **आज्ञार्थक वाक्य** है । पाँचवें वाक्य में विस्मय-आश्चर्य का भाव प्रकट हुआ है । इसके लिए **वाह** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **विस्मयार्थक वाक्य** है । छठे वाक्य में संदेह या संभावना व्यक्त की गई है । इसके लिए **होगा** शब्द का प्रयोग हुआ है । अतः यह **संभावनार्थक वाक्य** है । सातवें वाक्य में इच्छा, आशीर्वाद व्यक्त किया गया है । इसके लिए **खूब पढ़ो, खूब बढ़ो** का प्रयोग हुआ है । अतः यह **इच्छार्थक वाक्य** है । आठवें वाक्य में एक क्रिया का दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध होता है । इसके लिए **बिजली, रोशनी** शब्दों का प्रयोग हुआ है । अतः यह **संकेतार्थक वाक्य** है ।